१. पद

कविता का सारांश

यह अध्याय कवि सूरदास के जीवन और उनकी रचनाओं पर आधारित है। सूरदास का जन्म 1478 ई. में माना जाता है। वे जन्मांध थे और उनका पालन-पोषण आगरा-मथुरा क्षेत्र में हुआ। वे भक्तिकाल के प्रमुख कवि थे और श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त माने जाते हैं।

उनकी कविताओं का संकलन 'सूरसागर' के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी रचनाओं में भगवान श्रीकृष्ण के बाल रूप, गोपियों के साथ उनकी लीला, प्रेम और भक्ति का अद्भुत चित्रण मिलता है। सूरदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को भक्ति और प्रेम का संदेश दिया।

इस अध्याय में दी गई कविताओं के माध्यम से कवि ने गोपियों के माध्यम से श्रीकृष्ण को संदेश भेजा है। गोपियाँ श्रीकृष्ण को उनकी लीला और प्रेम के लिए स्मरण करती हैं तथा उनसे अपने गाँव लौटने का आग्रह करती हैं। कवि ने सरल, सहज और भावपूर्ण भाषा में भक्ति और प्रेम की गहराई को प्रस्तुत किया है।

सूरदास की रचनाओं का मुख्य उद्देश्य भगवान के प्रति अटूट प्रेम और भक्ति को जन-जन तक पहुँचाना है। उनकी कृतियाँ आज भी हिंदी साहित्य और भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

प्रश्न - अभ्यास

1. **गोपियों द्वारा उद्धव को बड़भागी कहने में क्या व्यंग्य निहित है?**

   उत्तर: गोपियों ने उद्धव को "बड़भागी" कहकर व्यंग्य किया क्योंकि वे ज्ञान का घमंड करके प्रेम का महत्व नहीं समझ पाए। उनका ज्ञान उन्हें अहंकारी बना रहा था, इसलिए यह व्यंग्यात्मक संबोधन है।

2. **उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?**

   उत्तर: उद्धव के व्यवहार की तुलना:

   - उल्लू से, जो दिन में अंधा रहता है।
   - मछली से, जो जल में रहते हुए भी प्यासा रहती है।
   - कठोर पत्थर से, जो भावनाओं से अछूता रहता है।

3. **गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?**

   उत्तर: गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं ।

   - कृष्ण को छोड़कर ज्ञान की बातें करने का उलाहना।
   - प्रेम के महत्व को न समझने का ताना।
   - योग-साधना का उपदेश देकर विरह पीड़ा बढ़ाने का व्यंग्य।

4. **उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?**

   उत्तर: उद्धव का योग-संदेश गोपियों की विरह-आग में घी डालने जैसा था, क्योंकि प्रेम-विरह में जलती गोपियाँ योग की बातें सुनकर और अधिक व्यथित हो गईं।

5. **मर्यादा न लही के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?**

   उत्तर: यह बताता है कि कृष्ण ने अब गोपियों के साथ प्रेम की पुरानी मर्यादाएँ निभाना छोड़ दिया है और राजनीति/राजकार्य में व्यस्त हो गए हैं।

6. **कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?**

   उत्तर: गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में करती हैं:

   - गोपियाँ स्वयं को गुड़ से चिपटी चींटियों जैसी मानती हैं, जो कृष्ण-प्रेम से दूर नहीं रह सकतीं।
   - कृष्ण को हारिल की लकड़ी समान अडिग मानती हैं।
   - वे मन, वचन और कर्म से पूर्णत: कृष्ण के प्रति समर्पित हैं।
   - सोते-जागते हर समय कृष्ण का स्मरण करती हैं।
   - योग का संदेश उन्हें प्रेम के आगे कड़वी ककड़ी जैसा प्रतीत होता है।

7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर: उन्होंने कहा कि योग का उपदेश उन्हें न दिया जाए, क्योंकि वे तो कृष्ण-प्रेम में डूबी हुई हैं। योग का उपदेश उन लोगों को दिया जाए जिनके मन स्थिर नहीं हैं।

8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर: गोपियाँ योग-साधना को निष्फल मानती हैं यदि उसमें प्रेम और भक्ति का तत्व न हो। वे योग को भावहीन मानती हैं।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर: राजा को प्रजा के प्रति प्रेम, दया और न्याय करना चाहिए, न कि उन्हें त्यागकर राजनीति में व्यस्त होना चाहिए।

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस ले लेने की बात कहती हैं?

उत्तर: गोपियों को कृष्ण में ऐसे अनेक परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन श्रीकृष्ण से वापस पाना चाहती हैं; जैसे-

- कृष्ण राजनीति सीखकर छल-कपटपूर्ण हो गए हैं।
- वे प्रेम की मर्यादा भूल गए हैं।
- वे राजधर्म से विमुख हो रहे हैं।
- अत्याचार मिटाने वाले अब स्वयं अनीति पर उतर आए हैं।

11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: गोपियाँ अत्यंत वाक्चतुर हैं और तर्क-वितर्क में किसी को भी मात दे सकती हैं। यहाँ तक कि विद्वान उद्धव भी उनके सामने निरुत्तर हो जाते हैं। इसका कारण है उनके हृदय में उमड़ता हुआ सच्चा कृष्ण-प्रेम। यही प्रबल प्रेम-भावना उद्धव को मौन कर देती है। सच्चे प्रेम की शक्ति इतनी महान होती है कि बड़े से बड़ा ज्ञानी भी उसके आगे नतमस्तक हो जाता है।

12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ

- श्रीकृष्ण-गोपियों का विरह और प्रेम का मार्मिक चित्रण।
- गोपियों के भावनात्मक तर्कों में भक्ति का उत्कर्ष।
- काव्य में व्यंग्य, करुणा और प्रेम का समन्वय।
- सहज, सरल और रसपूर्ण भाषा।

रचना और अभिव्यक्ति

13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर: गोपियाँ उद्धव से कह सकती हैं कि—

- प्रेम का मार्ग ज्ञान से ऊँचा है, क्योंकि प्रेम मनुष्य के हृदय को ईश्वर से जोड़ता है।
- योग केवल मन को स्थिर करता है, लेकिन प्रेम आत्मा को परमात्मा से मिला देता है।
- सच्चा भक्ति-भाव ज्ञान से अधिक प्रभावशाली होता है।
- हृदय में प्रेम हो तो किसी साधना की आवश्यकता नहीं रहती।
- कृष्ण के प्रेम में डूबा मन योग के नियमों से कहीं अधिक शांति और आनंद अनुभव करता है।
- जिस भक्ति में समर्पण और भाव की गहराई है, वह किसी भी योग या ज्ञान से श्रेष्ठ है।

14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर: गोपियों के पास कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम और भक्ति की शक्ति थी। यही गहन प्रेम उनके वाक्चातुर्य में प्रकट होकर ज्ञानी उद्धव को भी निरुत्तर कर देता था। उनके शब्दों में सच्चाई, भावनाओं की गहराई और समर्पण की शक्ति थी, जिससे वे तर्क में विजय प्राप्त कर सकीं।

15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: गोपियों ने कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं क्योंकि वे प्रेम और भक्ति की मर्यादा भूलकर छल-कपट और नीति की भाषा बोलने लगे हैं। वे पहले की तरह सहज और प्रेममय नहीं रहे।

समकालीन राजनीति में भी यह कथन प्रासंगिक है। आज के नेता भी भावनाओं से दूर होकर स्वार्थ, सत्ता और चालाकी में अधिक लगे रहते हैं। राजनीति में ईमानदारी और प्रेमभाव कम दिखाई देता है, जिससे यह कथन आज भी सटीक प्रतीत होता है।